विषय–हिन्दी
मार्किंग स्कीम (अंक योजना) दसवीं कक्षा

परीक्षार्थी के सही एवं उचित आंकलन के लिए उसकी उत्तर–पुस्तिका का मूल्यांकन एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य में थोड़ी–सी भी असावधानी गंभीर समस्या पैदा कर सकती है, जो परीक्षार्थी के भावी जीवन, शिक्षा–प्रणाली एवं अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था को कुप्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए आवश्यक है कि किसी परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका की जाँच करने के पूर्व उत्तर–पुस्तिका के मूल्यांकन संबंधी अंक–योजना एवं महत्त्वपूर्ण निर्देशों से परिचित हो लिया जाए। सत्र 2023–2024 हेतु दसवीं कक्षा की हिन्दी विषय संबंधी अंक–योजना इस प्रकार रहेगी–

महत्त्वपूर्ण निर्देशः–

1. उत्तर–पुस्तिका का मूल्यांकन अंक–योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही किया जाना चाहिए।
2. अंक–योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
3. मूल्यांकन करते समय परीक्षक सही उत्तर पर (√) का तथा गलत उत्तर पर गलत (x) का चिह्न अवश्य अंकित करें।
4. किसी भी प्रश्न को खाली न छोड़ें।
5. परीक्षक उत्तर–पुस्तिका के प्रत्येक पृष्ठ को ध्यानपूर्वक देखें क्योंकि कई बार परीक्षार्थी बाद के पृष्ठों पर भी उत्तर लिख देते हैं।
6. यदि किसी प्रश्न के उपभाग हों तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दाई ओर अंक दिए जाएं। बाद में उपभागों के इन अंकों का योग बाईं ओर के हाशिए में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।
7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और उसमें से किसी एक को काटा नहीं है, तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों, उस पर अंक दें। दूसरे उत्तर को काटकर उस पर O.A. लिख दें।
8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार–बार होने पर उसे अनदेखा करें और उस पर अंक न काटें।
9. यदि परीक्षार्थी ने अपने उत्तर में उत्तर से संबंधित सभी बिंदुओं का उल्लेख कर दिया है, तो उसे पूर्ण अंक देने में संकोच न करें।
10. परीक्षक निर्धारित समयानुरुप पूरा समय लेकर मूल्यांकन करें। मूल्यांकन में शीघ्रता मूल्यांकन प्रक्रिया को कुप्रभावित करती है।
11. उत्तर–पुस्तिका में किसी उत्तर या उत्तर के अंश को जाँचे बिना न छोड।
12. परीक्षक यह जाँच ले कि उत्तर के लिए दिए गए अंकों का योग ठीक है तथा किसी भी उत्तर के लिए निर्धारित अंकों से अधिक अंक नहीं दिए गए हैं।

13. उत्तर–पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों को आवरण पृष्ठ पर सही तथा शुद्ध रुप में अवतरित करें।
14. बड़ें उत्तरों के संदर्भ में उत्तर का जितना भाग सहीं हो, उस पर उचित अंक प्रदान करें।
15. प्रत्येक परीक्षक यह सुनिश्चित करें कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है, आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है। कुल योग को शब्द एवं अंक दोनों में लिखा गया है।
16. मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, अपितु अंक–योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

- उपर्युक्त मूल्यांकन निर्देश उत्तर–पुस्तिकाओं की जाँच हेतु आदेश नहीं अपितु केवल निर्देश हैं। यदि इन मूल्यांकन निर्देशों में किसी प्रकार की त्रुटि हो, किसी प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, अंक योजना में दिए गए उत्तर से अतिरिक्त कोई और भी उत्तर सही हो तो परीक्षक मुख्य परीक्षक से विचार–विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

प्रश्नक्रम संख्या	खंड (क) व्याकरण एवं रचना उत्तर	अंक विभाजन
प्रश्न–1	प्रश्न संख्या 1 के यथानिर्दिष्ट उत्तर	2x7=14
	(क) जिस समास का पूर्वपद संख्यावाची विशेषण तथा उत्तरपद प्रधान हो, उसे द्विगु समास कहा जाता है: जैसे– चौराहा–चार राहों का समूह	2
	(ख) सन्धि–विच्छेद– (i) सु+ आगत	1
	(ii) ने+ अन	1
	(ग) उपसर्ग – (i) निर्	1
	(ii) अभि	1
	(घ) पर्यायवाची (i) सागर– समुद्र, पारावार	1
	दिन –दिवस, दिवा	1
	(ङ) मुहावरों का अर्थ एवं वाक्य में प्रयोग	
	(i) कठपुतली होना– दूसरे के कहने पर चलना। रमेश तो आजकल अपनी पत्नी के हाथों की कठपुतली हो गया है।	1

(ii) ईद का चाँद होना– बहुत दिनों बाद दिखाई देना। 1

महेश! बहुत दिनों बाद मिले। तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।

(च) काव्य में जहां किसी शब्द का भिन्न संदर्भो में अलग–अलग अर्थ निकले, वहाँ श्लेष अलंकार होता है: यथा– 2

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष चून।।

(यहाँ 'पानी' शब्द का भिन्न संदर्भो में 'चमक', 'इज्जत' एवं 'जल' अर्थ प्रकट होता है।

(छ) दोहा एक अर्द्धसममात्रिक छंद है। इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में 13–13 तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 11–11 मात्राएं होती हैं। द्वितीय एवं चतुर्थ चरण के अंत में गुरु लघु वर्ण आते हैं: यथा–तुलसी या संसार में मिलयो, सबसों धाये।
ना जाने किस रुप में, नारायण मिल जाये।।

प्रश्न(2) किसी एक विषय पर निबंध (5)

भूमिका		1
विस्तार	+ निर्धारित शब्द सीमा	3
निष्कर्ष		1

प्रश्न(3) पत्र–लेखन (5)

(i)	आरंभ और अंत की औपचारिकताएं	1
(ii)	विषय वस्तु	3
(iii)	भाषा	1

(काव्य खंड) क्षितिज भाग–2

प्रश्न (4) बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर (6)

(क) (iv) उद्धव को	1
(ख) (i) शिव के	1
(ग) (iii) सुख का	1
(घ) (iii) आह्वान का	1
(ङ) (ii) कवि	1
(च) (i) भारी	1

प्रश्न (5) काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर (5)

(i) कवि का नाम– मंगलेश डबराल ½

कविता का नाम– संगतकार ½

(ii) चट्टान जैसा भारी 1

(iii) मुख्य गायक के छोटे भाई की अथवा उसके शिष्य की अथवा उसके किसी दूर के रिश्तेदार की। 1

(iv) गर्जना/भारी आवाज 1

(v) सुंदर, कमजोर, काँपती हुई 1

प्रश्न(6) काव्य–सौंदर्य– (i) भाव सौंदर्य 1½

(ii) भाषा/शिल्प सौंदर्य 1½

भाव–सौंदर्य– कवि द्वारा स्पष्ट किया गया है कि इस समय समस्त विश्व के गरीब, किसान व मजदूर कुछ उच्चवर्ग के लोगों के पापाचार और अन्याय से पीड़ित है। क्रांति के रुप में बादल का आगमन ही धरती और मनुष्यों का ताप हर कर उन्हें शीतलता प्रदान कर सकता है।

शिल्प सौंदर्य– साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग,
तत्सम् शब्दावली की प्रधानता, ओज गुण,
वीप्सा अलंकार, छंद मुक्त कविता

प्रश्न(7) (क) दृष्टिकोण नकारात्मक। कृष्ण से दूर ले जाने वाली। कड़वी ककड़ी तथा बीमारी के समान। 3

(ख) आत्मकथा लेखन सहज नहीं, इसमें अपनी अच्छाईयों के साथ बुराईयों कमियों तथा कमजोरियों को भी उजागर करना पड़ता है। अपने मित्रों, साथियों आदि के बारे में भी सत्य लिखना होता है। साथ ही अपने व्यक्तिगत तथा निजी क्षणों के विषय में भी लिखना होता है। 3

(खंड–ग) क्षितिज भाग–2

प्रश्न(8)	बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर(गद्य खंड)	(6)
	(क) (iii) ड्राइंग मास्टर ने	1
	(ख) (ii) मंझोला	1
	(ग) (ii) सूंघकर	1
	(घ) (ii) रसोई को	1
	(ङ) (ii) डूमराँव	1
	(च) (iii) संस्कृति का	1
प्रश्न(9)	गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर	(5)
	(i) लेखक का नाम – रामवृक्ष बेनीपुरी	½
	बालगोबिन भगत	½
	(ii) प्रस्तुत गद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक क्षितिज (भाग–2) में संकलित पाठ 'बालगोबिन भगत' से अवतरित है। इसके रचयिता रामवृक्ष बेनीपुरी हैं। इस पाठ में उन्होंने बालगोबिन भगत नामक एक संगीत साधक का व्यक्तिचित्र प्रस्तुत किया है।	1
	(iii) जिस दिन उसका बेटा मरा।	1
	(iv) बेटे के कुछ सुस्त और बोदा–सा होने के कारण।	1
	(v) सुस्त और बोदे–से आदमियों को।	1
प्रश्न(10)	स्वयं प्रकाश या मन्नू भंडारी का लेखक परिचय	(5)
	(i) जीवन परिचय	1
	(ii) रचनाएं	1
	(iii) साहित्यिक विशेषताएं	1½
	(iv) भाषा–शैली	1½

प्रश्न(11) (क) कैप्टन चश्में वाले की मृत्यु के पश्चात् हालदार साहब ने निश्चय किया था कि वे कस्बे से गुजरते वक्त नेता जी की मूर्ति की तरफ नहीं देखेंगे क्योंकि अब नेता जी की मूर्ति पर चश्मा लगाने वाला कोई नहीं रहा हैं। परन्तु अगली बार जब वे उस चौराहे से गुजरे तो आदत से मजबूर उनकी आँखे स्वतः ही नेता जी की मूर्ति की ओर चली गई। उन्होंने देखा कि किसी ने उस मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा चश्मा लगा दिया था। (2)

(ख) शहनाई और डुमराँव का गहरा संबंध है। वहां सोन नदी के किनारे नरकट नामक घास मिलती है। इस घास की रीड शहनाई बजाने के काम आती है। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मभूमि भी यही डुमराँव है। इसी कारण शहनाई की दुनियां में डुमराँव को याद किया जाता है। (2)

(खंड–घ) कृतिका भाग–2

प्रश्न(12) कृतिका (भाग–2) के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 3+3=6

(क) बचपन की बड़ी अद्‌भुत, मनोरम एवं सजीव तस्वीर की प्रस्तुती। बच्चों के प्रति माता–पिता स्नेह का वर्णन। बच्चों के प्रति माता–पिता का मित्रवत् व्यवहार। बच्चों की शरारतों, अठखेलियों एवं मनोविनोद का वर्णन । 3

(ख) गंतोक एक कठिन पर्वतीय स्थल है। अपने जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यहाँ के लोग मेहनत से घबराते नहीं हैं। कठिनाईयों के बावजूद ये लोग मस्त रहते हैं। इसीलिए गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा गया है। 3

(ग) जापान के हिरोशिमा नामक नगर मं घूमते हुए लेखक को सड़क पर एक जले हुए पत्थर पर उस व्यक्ति की लंबी, 3

उजली छाया दिखाई दी, जो परमाणु विस्फोट के समय वहाँ खड़ा रहा होगा। इस विस्फोट के कारण वह भाप बनकर उड़ गया होगा और उसकी छाप उस पत्थर पर पड़ गई होगी। इसी अनुभव से उत्पन्न अनुभूति ने लेखक को 'हिरोशिमा' कविता लिखने पर विवश कर दिया।

खण्ड–ड़ नैतिक शिक्षा

प्रश्न(13) (क) बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर (4)

1. (iv) उपर्युक्त सभी 1
2. (i) 16 वर्ष 1
3. (iii) मदन मोहन मालवीय को 1
4. (iii) सारनाथ 1

(ख) हमें अहंकार से मुक्त होकर ऐसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए, जिससे दूसरों को भी शीतलता की प्राप्ति हो तथा हम स्वयं भी शीतल हो जाएं। (3)

(ग) (i) आत्मकथा का नाम–'द फॉल आफ ए स्पैरो' 1½

(ii) बचपन में अपनी एयरगन का ट्रिगर अचानक दब जाने से आकाश में उड़ती हुई एक पीली चिड़िया के घायल हो जाने के कारण। 1½